

# जनरिज़म टुडे

पत्र: 13

प्र०: 42

नई दिल्ली

लखनऊ, 10 नवंबर 2025

पृष्ठ: 09

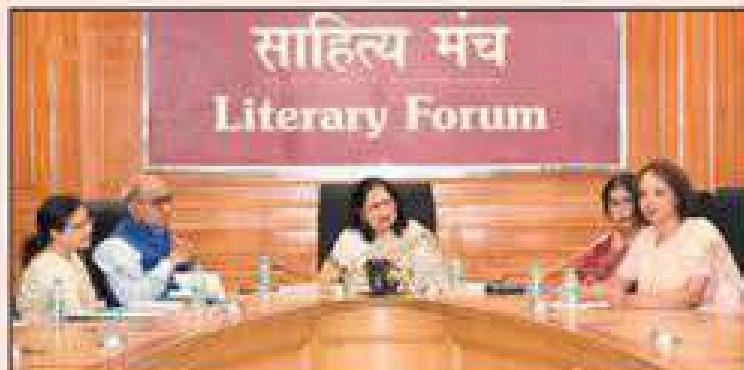
प्र०: 10

Email : journalismtoday7@gmail.com

## साहित्य अकादेमी द्वारा रवींद्रनाथ ठाकुर की जयंती पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन

जनरिज़म टुडे, लखनऊ

नई दिल्ली : साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य भवन कार्यक्रम ये रवींद्रनाथ ठाकुर की जयंती के अवसर पर प्रकृति और पर्यावरण पर सर्वोदय ठाकुर विद्यक विमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अवधीनत प्रश्नावान अधिकारी सेलिब्रिटी मलाशी लाल ने की तथा गण चक्रवर्ती, रेखा सोम और रेखा सेठी ने अपने अपने अलेखा प्रस्तुत किए। अपने अलेखीय वक्तव्य में मलाशी लाल ने कहा कि रवींद्रनाथ ठाकुर हमेशा अपनी जयंती पर एक छायिता लिखते थे। उनके जीवन पर प्रकृति और संगीत का योहां प्रभाव था। इस प्रेम के चलते ही उन्होंने जातिनिकेतन के रूप में प्रकृति के बीच पढ़ाने का अनोखा संकल्प लिया था। उन्होंने उनकी



कहानियों में भी प्रकृति वर्णन की बात की। उन्होंने उन्होंने कहा कि यह युगी की बात है कि रवींद्रनाथ ठाकुर के सेलिब्रिटी का सभी भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं में अनुवाद होने के कारण आज यह प्रकृति सबसे ज्यादा दर्शनीय स्थिति में है तब प्रकृति और पर्यावरण के प्रति उमड़ी प्रतिवेदन हमें नए विकल्प अपनाने के प्रति सक्रिय कर रही है। गण चक्रवर्ती ने जीतांजलि

से उद्घाटन देते हुए कहा कि यह अपने बीते में मानवीय जीवन और हमारे जीवान के सब चक्रों में सबसे को एक दूसरे का पूरक मानते हैं और उसमें कोहे मकोहे जैसे मकड़ी, चौटी झड़ी से भी सीखने की प्रेरणा देते हैं। इनमें ही नहीं वह मानव की प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी को भी चिह्नित करते हैं। विषय भारती की तुलना तथा वर्णन की प्राचीन परंपराओं से करते हुए ही उन्होंने

सति बन में प्रकृति से जुड़े लोकांगों को मनाना शुरू किया। वे मानव के पूजीवाट और धोषकाट आनंदण का सम्बन्ध का विशेष व्याप्ति थे। रुद्रवीज में उन्होंने बड़े लोकों का विशेष भी किया। काम्पी यहले प्रकृति को लेकर उनके व्यक्ति किए नए विचार अलग भी ग्राहकीय हैं। रेखा सोम ने टैगोर के बीतों में प्रकृति नित्रण पर अपनी चात रखते हुए कहा कि उनके 283 शीतों में प्रकृति का वर्णन है। जीतांजलि ने भी उन्होंने उन्होंने के परिवर्तन के आसार पर जारी उत्तर, हेमंत उत्तर, चंद्रित उत्तर और मानसुन उत्तरव मगाने की परंपरा अप्रैष की। विषयकमां दिवस पर स्थानीय अदिवासीयों की बहुई वस्तुओं को लाइटें द्या प्रशाय भी प्रकृति से परित्यं संरूपत सबै बापामे का दरीका था।